शिवशक्ति सरस्वती माँ

26. मम्मा रोज़ मुरली ज़रूर पढ़ती थीं अथवा टेप द्वारा सुनती थीं। भले ही रात के 11 बजे हों लेकिन कल की मुरली सुनकर ही मम्मा सोती थीं। जितनी अपने कर्त्तव्य पर पक्की रही उतनी ही ईश्वरीय पढ़ाई पर भी पक्की रही। हॉस्पिटल में भी मम्मा रोज़ मुरली सुनती थीं। हमने मम्मा को सदा अलर्ट और एक्यूरेट देखा है। हमने कभी भी मम्मा की आँखें थकी हुई नहीं देखी हैं। सदा उनके नयन बाबा की याद में मगन देखे हैं। मम्मा में नम्रता इतनी थीं कि जब बाबा कहते थे मात-पिता का याद-प्यार और नमस्ते, तब मम्मा अपने को माता नहीं समझती थीं। ऊपर इशारा करते कहती थीं कि उस मात-पिता का याद और प्यार है। मम्मा केवल ज़िम्मेवारी निभाने में, पालना देने में अपने को माता समझती थीं। मम्मा ने माँ का पद स्वीकार नहीं किया परन्तु माँ का कर्त्तव्य स्वीकार कर उसको पूर्णरूपेण निभाया। बाबा के सामने वह एक छोटी, नन्हीं-सी बच्ची का रूप धारण कर लेती थीं और यज्ञवत्स और भक्तों के सामने आदिदेवी जगदम्बा माँ का रूप धारण कर लेती थीं।

27. कई बार हम मम्मा से पूछते थे, "मम्मा आप क्या सोच रही हैं, कहाँ हैं?" तब मम्मा बोलती थीं, "मैं यहाँ नहीं चल रही हूँ, मैं वैकुण्ठ की धरनी पर चल रही हूँ।" कभी-कभी हमें सुनाती थीं कि मुझे महारानी श्रीलक्ष्मी के रूप में ये-ये अनुभव हुआ, महाराजकुमारी श्रीराधा के रूप में ये-ये अनुभव हुआ। अपने भविष्य और बाबा के महावाक्यों पर मम्मा का निश्चय शत-प्रतिशत था। बाबा ने कहा, उन्होंने माना और वैसे चलकर दिखाया। मम्मा की हर बात शक्तिशाली होती थी योग में, ज्ञान में, धारणा में और सेवा में। मम्मा में न किसी के प्रति आकर्षण हुआ और न किसी से नफ़रत हुई। मम्मा ने सबको अपना बनाया और वह सबकी बनकर रहीं।

28. मम्मा की विशेष धारणा थी अन्तर्मुखता। मम्मा सबके साथ होते हुए भी अपने आप में अकेली रहती थीं। आलमाइटी बाप के साथ वार्तालाप करती रहती थीं। मम्मा अमृतवेले 2 बजे उठकर अपने कमरे में कुर्सी पर बैठ एकान्त में बाबा को याद करती थीं। दिन में कर्म करते समय भी ज्ञान के मनन-चिन्तन में मगन रहती थीं।